राजा हर्ष, जिन्हें हर्षवर्द्धन के नाम से भी जाना जाता है, प्राचीन भारत के एक प्रमुख शासक थे जो 7वीं शताब्दी ई.पू. के दौरान रहते थे। वह भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति हैं और यूपीएससी परीक्षाओं के लिए एक महत्वपूर्ण विषय हो सकते हैं। यहाँ राजा हर्ष पर कुछ मुख्य नोट्स हैं:

1. प्रारंभिक जीवन और सत्ता में वृद्धि**:**

- हर्ष का जन्म 590 ई. में थानेसर (वर्तमान हरियाणा, भारत) में पुष्यभूति राजवंश में हुआ था।
- वह थानेसर की गद्दी पर बैठा और बाद में उसने अपना शासन अन्य क्षेत्रों तक बढ़ाया।

2. साम्राज्य का विस्तार**:**

- हर्ष एक शक्तिशाली राजा था जो अपने सैन्य अभियानों और क्षेत्रीय विस्तार के लिए जाना जाता था।
- उन्होंने उत्तरी भारत को एकजुट करने की कोशिश की और भारतीय उपमहाद्वीप के एक महत्वपूर्ण हिस्से पर नियंत्रण स्थापित किया।
- उनके साम्राज्य में वर्तमान उत्तरी और मध्य भारत के क्षेत्र शामिल थे।

3. बौद्ध धर्म का संरक्षण**:**

- हर्ष एक कट्टर बौद्ध थे और उन्होंने अपने शासन के दौरान बौद्ध धर्म को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
- उन्होंने 7वीं शताब्दी की शुरुआत में "कन्नौज सभा" (कन्नौज प्रशस्ति) बुलाई, जिसने दुनिया के विभिन्न हिस्सों से बौद्ध विद्वानों और भिक्षुओं को आकर्षित किया।
- प्रसिद्ध चीनी बौद्ध भिक्षु जुआनज़ैंग ने हर्ष के शासनकाल के दौरान भारत का दौरा किया और अपने अनुभवों को "पश्चिमी क्षेत्रों पर जुआनज़ैंग के ग्रेट टैंग रिकॉर्ड्स" में दर्ज किया।

4. प्रशासन और शासन**:**

- हर्ष के प्रशासन की विशेषता एक सुव्यवस्थित नौकरशाही के साथ एक केंद्रीकृत प्रणाली थी।
- वह आम लोगों तक अपनी पहुंच और उनके कल्याण के प्रति चिंता के लिए जाने जाते थे।
- प्रशासन में ग्राम प्रधानों (ग्रामिकों) और प्रांतीय गवर्नरों (महाराजाओं) सहित विभिन्न अधिकारी शामिल थे।

5. धर्म और सहिष्णुता**:**

- हालाँकि हर्ष बौद्ध थे, उन्होंने धार्मिक सहिष्णुता को बढ़ावा दिया और हिंदू धर्म सहित विभिन्न धार्मिक परंपराओं का समर्थन किया।
- उन्होंने बौद्ध और हिंदू दोनों धार्मिक संस्थानों को भूमि और संसाधन दिए।

6. साहित्य एवं संस्कृति:

- हर्ष स्वयं एक विद्वान और कवि थे और उन्होंने तीन संस्कृत नाटकों के लेखक थे: "नागानंद," "रत्नावली," और "प्रियदर्शिका।"
- उनका दरबार शिक्षा और संस्कृति का केंद्र था, जो विद्वानों, कवियों और कलाकारों को आकर्षित करता था।

7. पतन और उत्तराधिकार:

- 647 ई. में हर्ष की मृत्यु के बाद उसके साम्राज्य को चुनौतियों का सामना करना पड़ा।
- एक मजबूत उत्तराधिकारी की अनुपस्थिति के कारण उसके साम्राज्य का धीरे-धीरे पतन हुआ, जो छोटे-छोटे क्षेत्रीय राज्यों में विभाजित हो गया।

8. विरासत:

- राजा हर्ष को एक प्रमुख शासक के रूप में याद किया जाता है जिन्होंने अपने समय के सांस्कृतिक, धार्मिक और साहित्यिक विकास में योगदान दिया।
- उन्होंने अपने पीछे धार्मिक सहिष्णुता और कला तथा विद्वता के संरक्षण की विरासत छोड़ी।

LEARNING MANTRAS